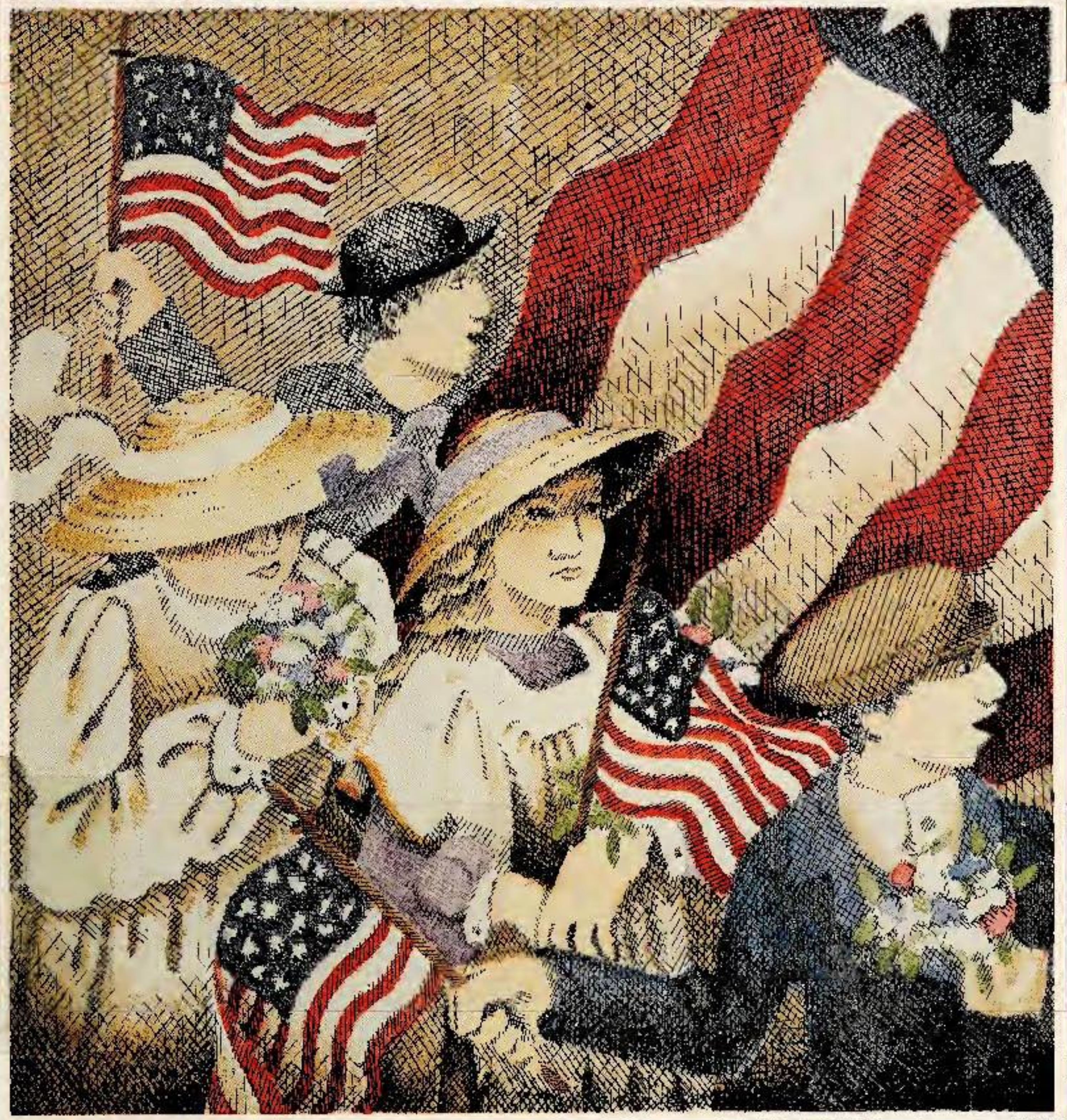
मेमोरियल डे

लेखनः जैफरी स्कॉट, चित्रः पीटर ई. हैनसन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



मेमोरियल डे

“इस विशेष अवकाश के बारे में मुश्किल से मिलने वाली जानकारियों का सुविधाजनक स्रोत।”

-ए.एल.ए. पुस्तक सूची

अधिकतर अमरीकी गर्मियों के आगाज़ के रूप में मेमोरियल डे (स्मृति दिवस) के अवकाश से परिचित हैं। पर उनमें से कितने इसके उद्गम के बारे में जानते हैं? जैफरी स्कॉट इस अमरीकी राष्ट्रीय अवकाश की पूरी कहानी प्रस्तुत करते हैंः नागरिक युद्ध के बाद 1878 में एक छोटे कस्बे में इसकी शुरुआत से लेकर 1971 में अंततः इसे राष्ट्रीय अवकाश घोषित किए जाने तक।

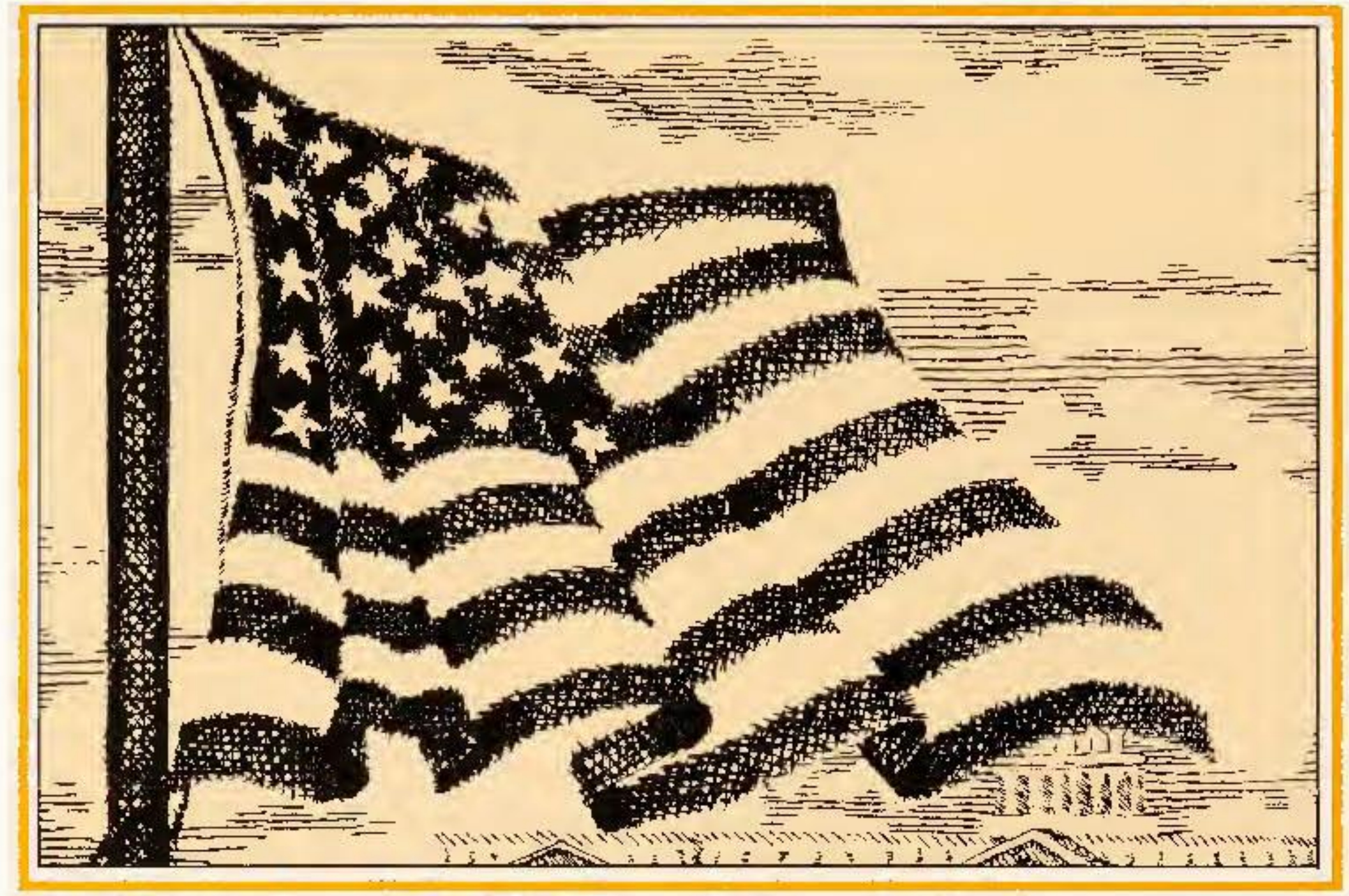
मेमोरियल डे



लेखनः जैफरी स्कॉट

चित्रः पीटर ई. हैनसन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



हर साल मई महीने के अंतिम सोमवार को हम अमरीकी मेमोरियल डे (स्मृति दिवस) मनाते हैं।

मेमोरियल डे गर्मियों के आगाज़ का संकेत देता है।

इसका जश्न अमरीका भर में मनाया जाता है।

पर इसे मेमोरियल डे क्यों कहा जाता है?

हम उत्सव किस बात का मना रहे होते हैं?



मेमोरियल डे का आरंभ अमरीकी
गृह यूद्ध से जुड़ा है।

ज़रा कल्पना करो कि तुम 1863 में जी रहे हो।

तुम एक घास के खेत में खड़े हो।

चारों ओर धुंध है,

बन्दूकों के धुंए के कारण,

जो खेत पर घुमड़ रहा है।

अचानक नीले कोट पहने सैनिक धुंए से निकलते हैं।

खेत के दूसरी ओर,

सलेटी कोटधारी सैनिक उनके इन्तज़ार में खड़े हैं।

वे इस हमले के लिए तैयार हैं।

बन्दूकों की आवाज़ हवा में तैरने लगती हैं।

तोपें गरजती हैं और

वे भी आग और धुंआ उगलती हैं।

लोग चीखते-चिल्लाते हैं।

सलेटी और नीली आकृतियाँ धरती पर गिरती हैं।

जल्द ही समूचे खेत में सलेटी और नीली ढ़ेरियाँ
बिखरी नज़र आने लगती हैं।

ये सब अमरीकी गृह युद्ध में
घायल और मारे गए
अनकों सैनिकों में से
कुछ हैं।

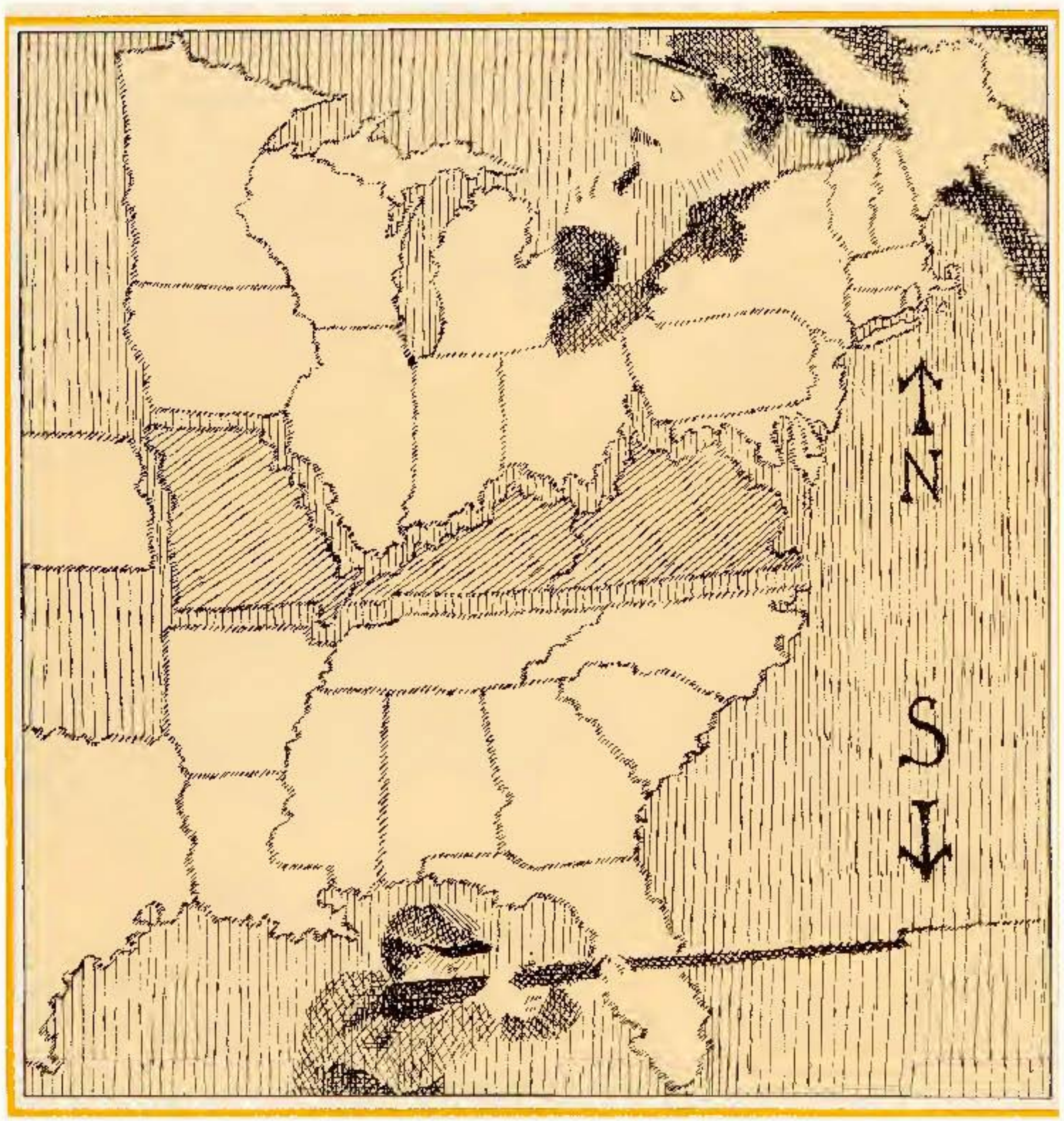


गृह युद्ध में

अमरीकियों ने अमरीकियों से जंग लड़ी थी।

दक्षिणी राज्यों के सैनिक,

उत्तरी राज्यों के सैनिकों से भिड़े थे।



वे इस मुद्दे पर लड़ रहे थे कि

संयुक्त राज्य एक देश बना रहेगा या नहीं।

दक्षिणी राज्यों के सैनिकों की वर्दी सलेटी रंग की थी।

उत्तरी राज्यों के सैनिक नीली वर्दी में थे।

पर उस स्थिति में क्या होता

जब कोई इन्सान न्यू यॉर्क में रहता हो

और उसका भाई वर्जीनिया में?

गृह युद्ध में दो भाई एक-दूसरे के विरोधी पक्ष के लिए लड़ते मिले।

पिताओं ने खुद को अपने बेटों के

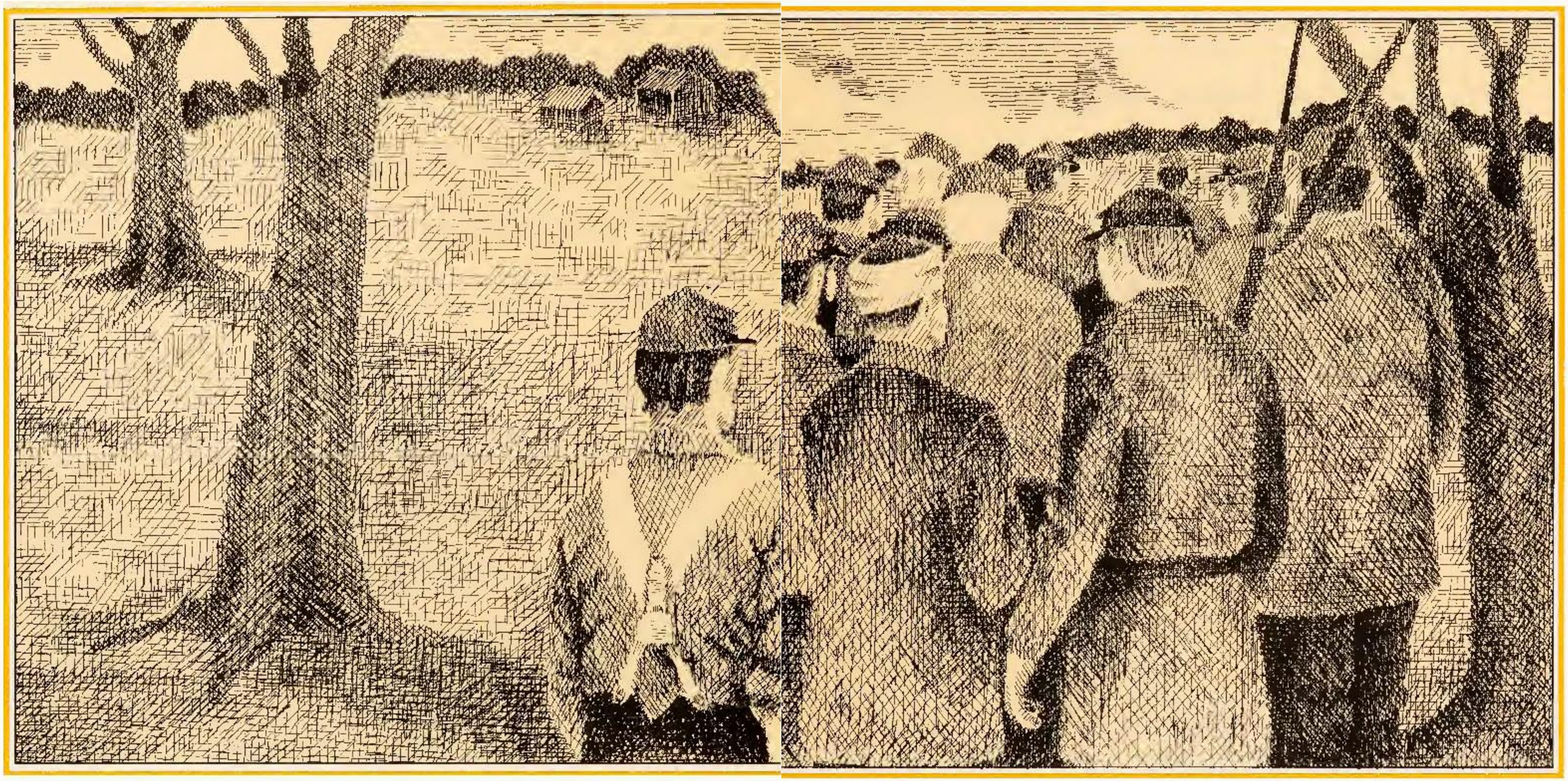
ख़िलाफ़ लड़ता पाया।

चचेरे-ममेरे भाई

एक-दूसरे के ख़िलाफ़ लड़ते दिखे।

इस सब ने गृह युद्ध को

भयावह बना दिया।



गृह युद्ध 1861 में आरंभ हुआ।

यह चार लम्बे वर्षों तक जारी रहा।

1865 में युद्ध जब समाप्त हुआ तब तक

हज़ारों सैनिक मारे जा चुके थे।

आख़िरकार सैनिक घर लौट सके।

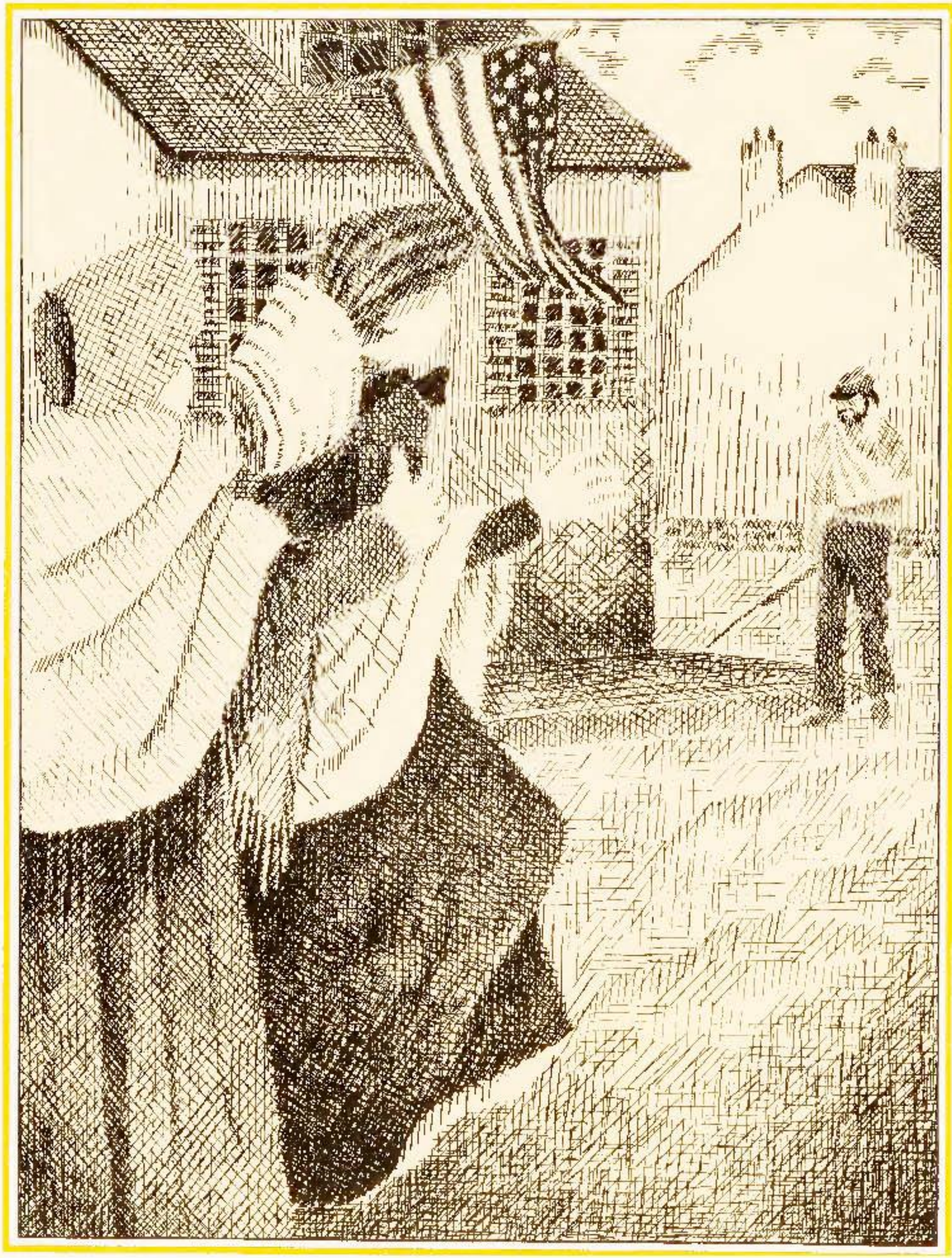
बेशक वे खुश थे

कि जंग खत्म हो चुकी थी,

पर साथ ही उन्हें तमाम दूसरी तरह की

भावनाओं का अहसास भी हो रहा था।

अव्वल तो वे बेहद थक चुके थे।

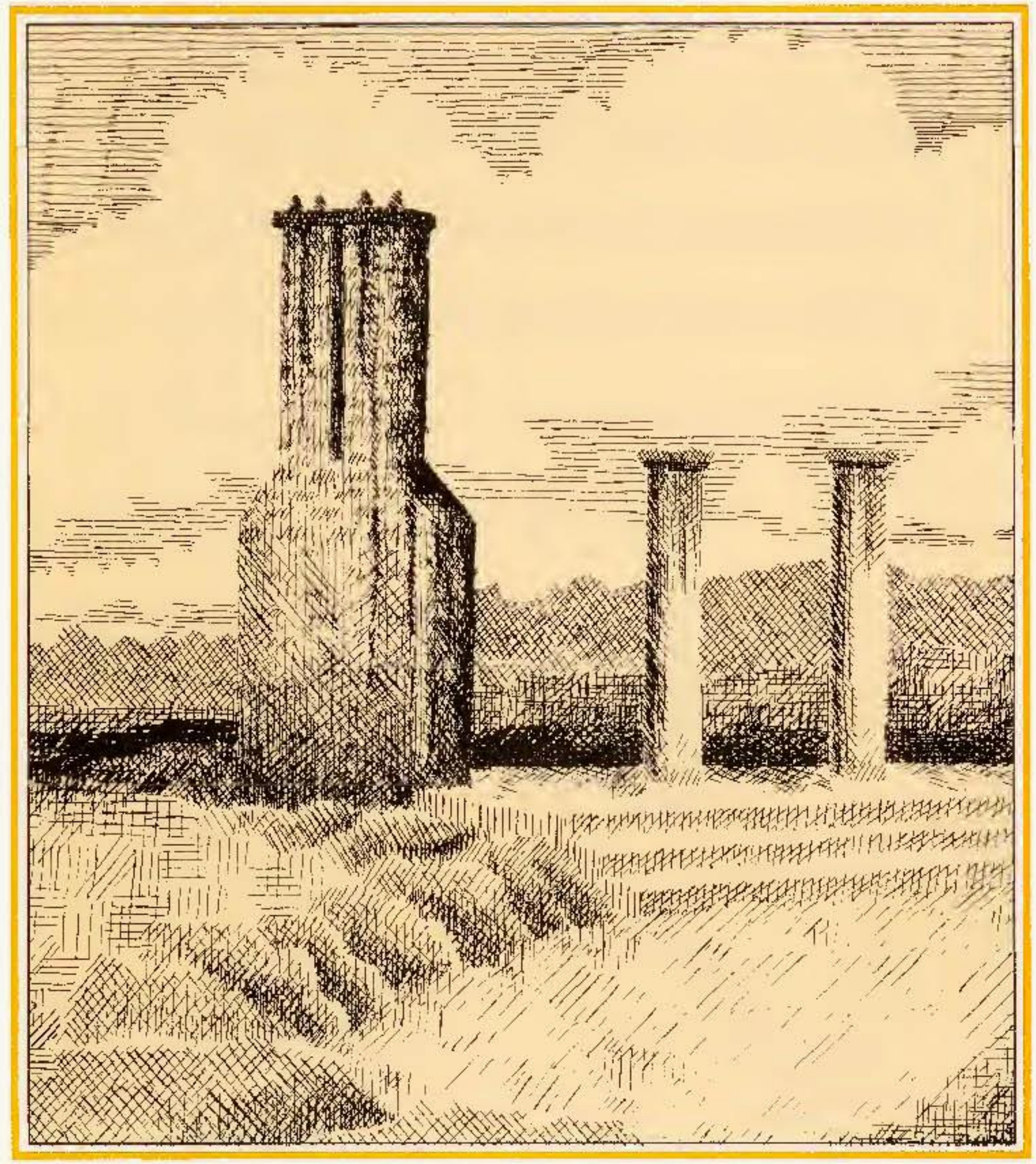


वे लगातार लड़ते रहे थे,
चार लम्बे सालों तक।
उनमें से कई घायल हुए थे।
किसीने अपना हाथ या बाज़ू खो दिया था।
दूसरों ने अपना पाँव या टांगें।
वे जानते थे कि उनकी ज़िन्दगियाँ,
युद्ध के पहले जैसी थीं,
अब उससे बिलकुल ही अलग होंगीं।
कुछ सैनिकों ने अपने दोस्त और रिश्तेदारों को
जंग के मैदान में मरते देखा था।
दूसरों को इसकी ख़बर
घर पहुँचने पर मिली,
कि उनके भाई या पिता
जंग में मारे गए हैं।



दक्षिण में, जहाँ

कई लड़ाइयाँ हुई थीं,



सैंकड़ों सैनिकों ने

घर पहुँचने पर पाया कि उनके घर,

जल कर राख हो चुके हैं।

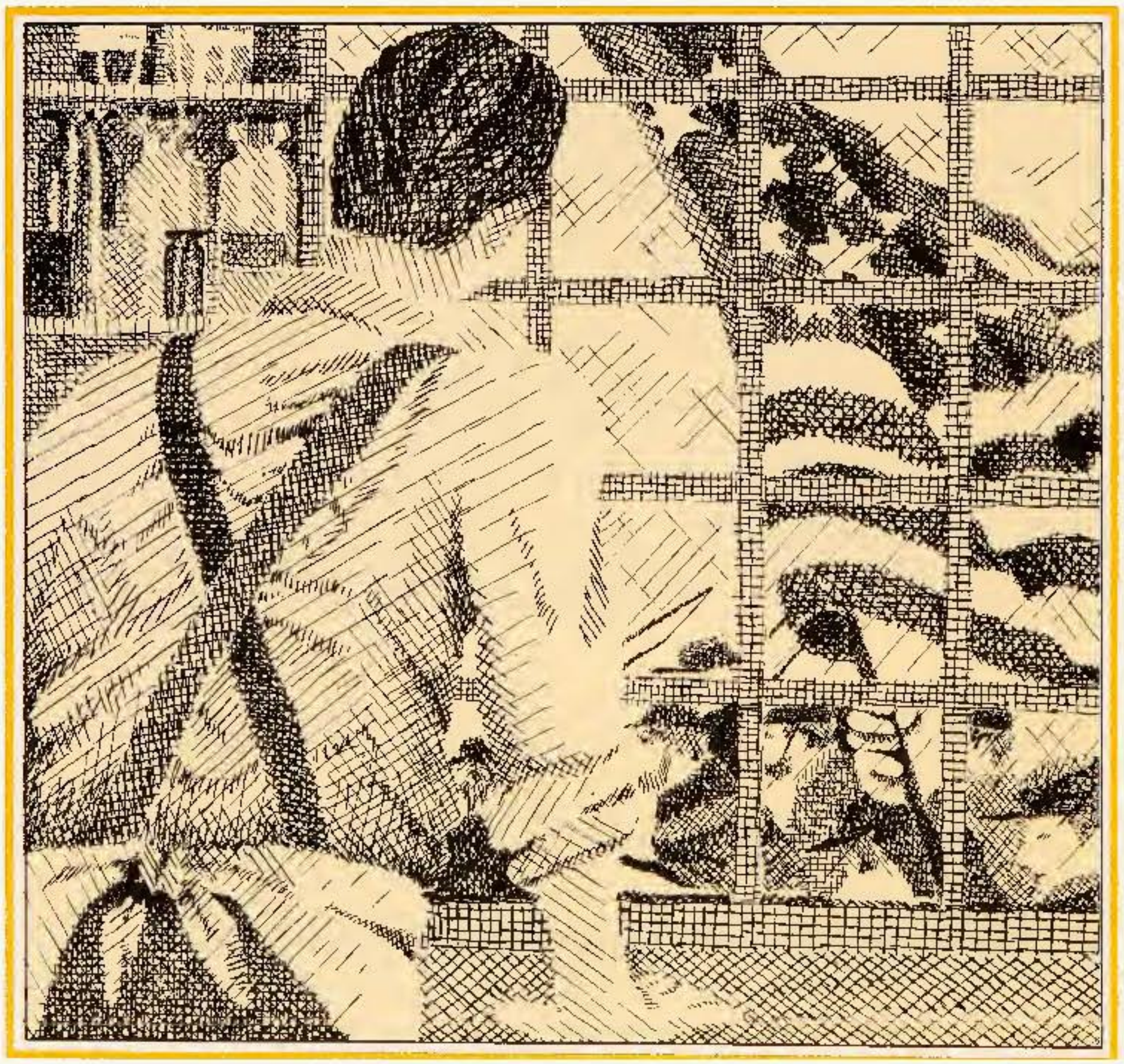
हैनरी सी. वैलेस

वॉटरलू, न्यू यॉर्क में दवा बेचने का काम करते थे।

उन्होंने सैनिकों को

अपने छोटे से कस्बे में लौटते देखा।

उसके मन के भाव मिश्रित थे।



उन्हें एक ओर तो खुशी थी कि जंग खत्म हो चुकी है,

पर उनके मन में उदासी भी थी।

"हमें कुछ करना चाहिए," उन्होंने कहा,

"उन सैनिकों के सम्मान में जो हमारे लिए

इतनी बहादुरी से लड़े।

और उनके सम्मान में भी जो जंग में मारे गए।"

सो, हैनरी वैलेस ने तय किया कि वॉटरलू

को एक जश्न मनाना चाहिए।

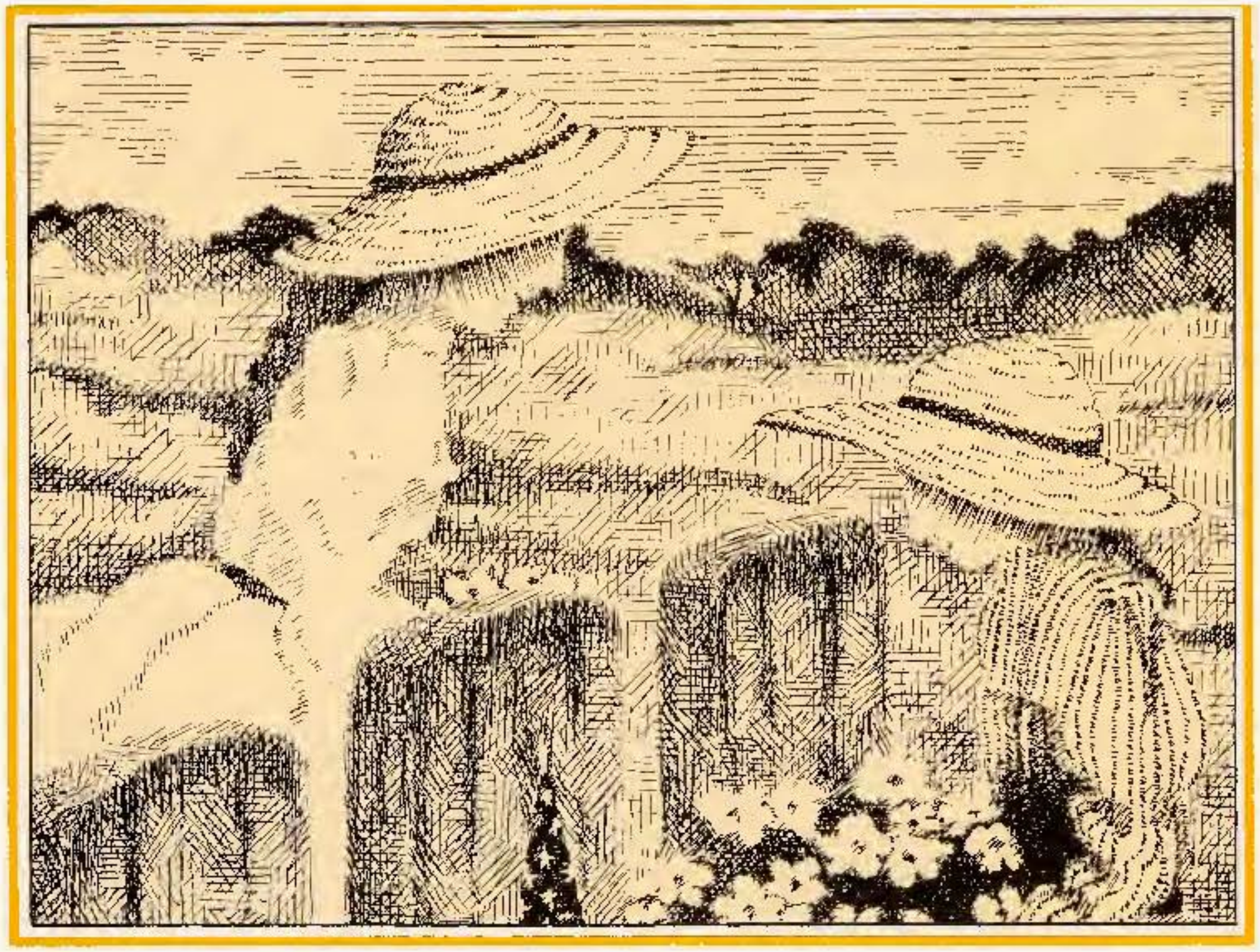
जो लोग जंग में मारे गए,

उनकी कब्रों को लोग

फूलों और झंडों सजाएं।

जो सैनिक घर लौट आए, जिन्हें वैटरन जाता है,

वे एक जुलूस में जुड़ कब्रिस्तान तक जाएं।



वैलेस ने अपने दोस्तों से बात की।

सबको लगा कि ख़याल उम्दा है।

सो, 5 मई 1866 के दिन

वॉटरलू, न्यू यॉर्क के बाशिन्दों ने

गृह युद्ध के सैनिकों का सम्मान किया।

उन्होंने अपने इस सम्मान उत्सव को

'डेकोरेशन डे' (सज्जा दिवस) का नाम दिया।

एक अन्य व्यक्ति भी थे जिन्हें ठीक वैलेस जैसा ख़याल सूझा।

उनका नाम था जनरल जॉन ए. लोगन।

जनरल लोगन उत्तरी राज्यों के वैटरनों के एक बड़े समूह का नेतृत्व करते थे।

यह समूह ग्रैंड आर्मी ऑफ द रिपब्लिक,

या संक्षेप में जी. ए. आर. कहलाता था।

जनरल लोगन ने जी. ए. आर. के सभी सदस्यों को एक हुकुम दिया।

उन्होंने कहा कि वे सब उत्तर के सैनिकों की कब्रों की सजाएं।

उन्होंने कहा कि वे ऐसा हर साल 30 मई को किया करें।

1868 तक वैलेस का डेकोरेशन डे

और जी. ए. आर. का डेकोरेशन डे जुड़ गए थे।

इसके बाद सभी उत्तरी राज्य 30 मई को ही
डेकोरेशन डे मनाने लगे।

चलो देखते हैं कि 1878 में एक छोटा कस्बा

अपना डेकोरेशन डे कैसे मनाता था।

डेकोरेशन डे की गतिविधियाँ 29 मई को

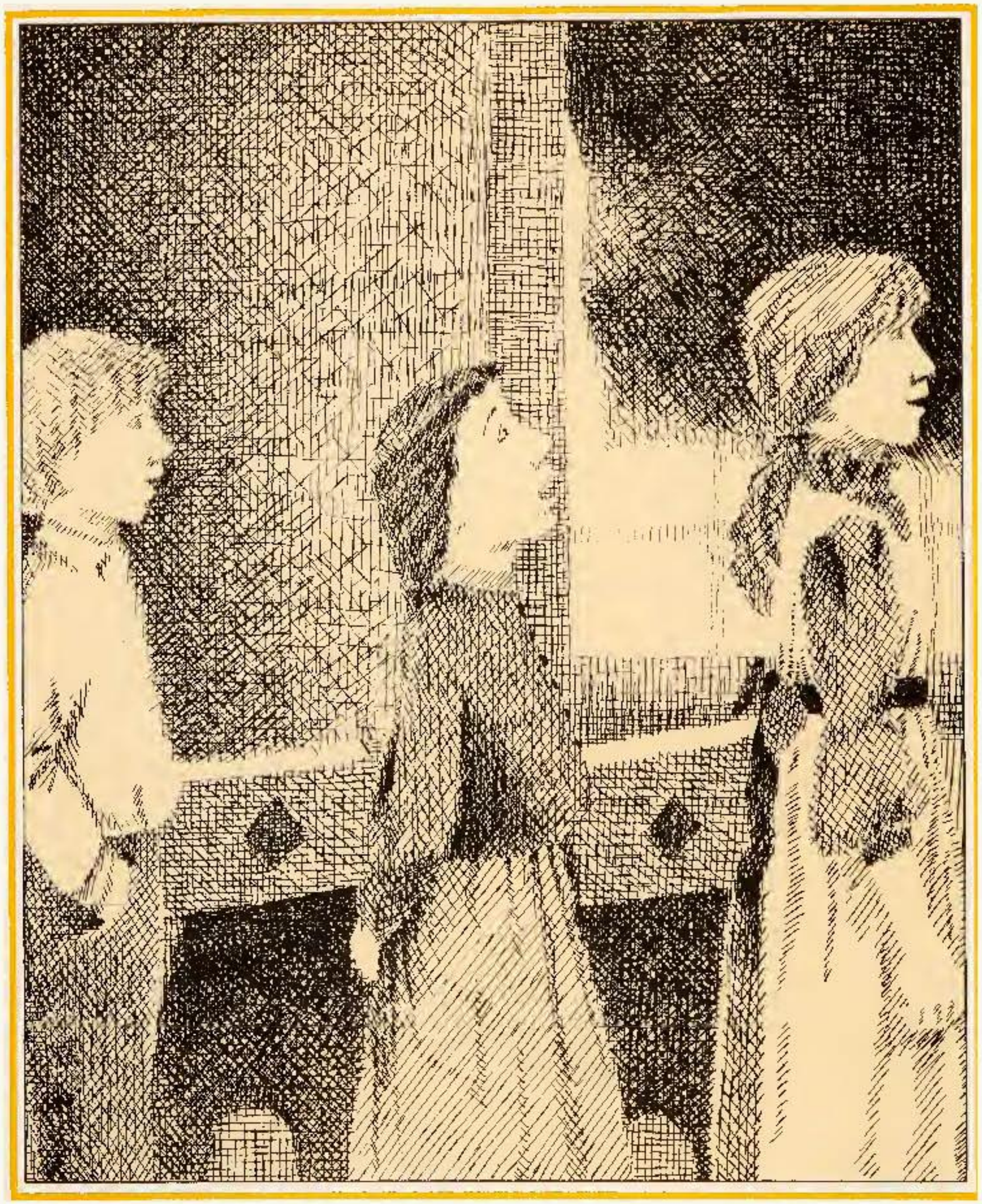
स्कूल भवन के एक कमरे में शुरू हुईं।

सबसे पहले दो छात्रों, सारा गुडह्यू,

और जॉनोथन फ्रीबार्न ने

गृह युद्ध पर कविता पाठ किया।





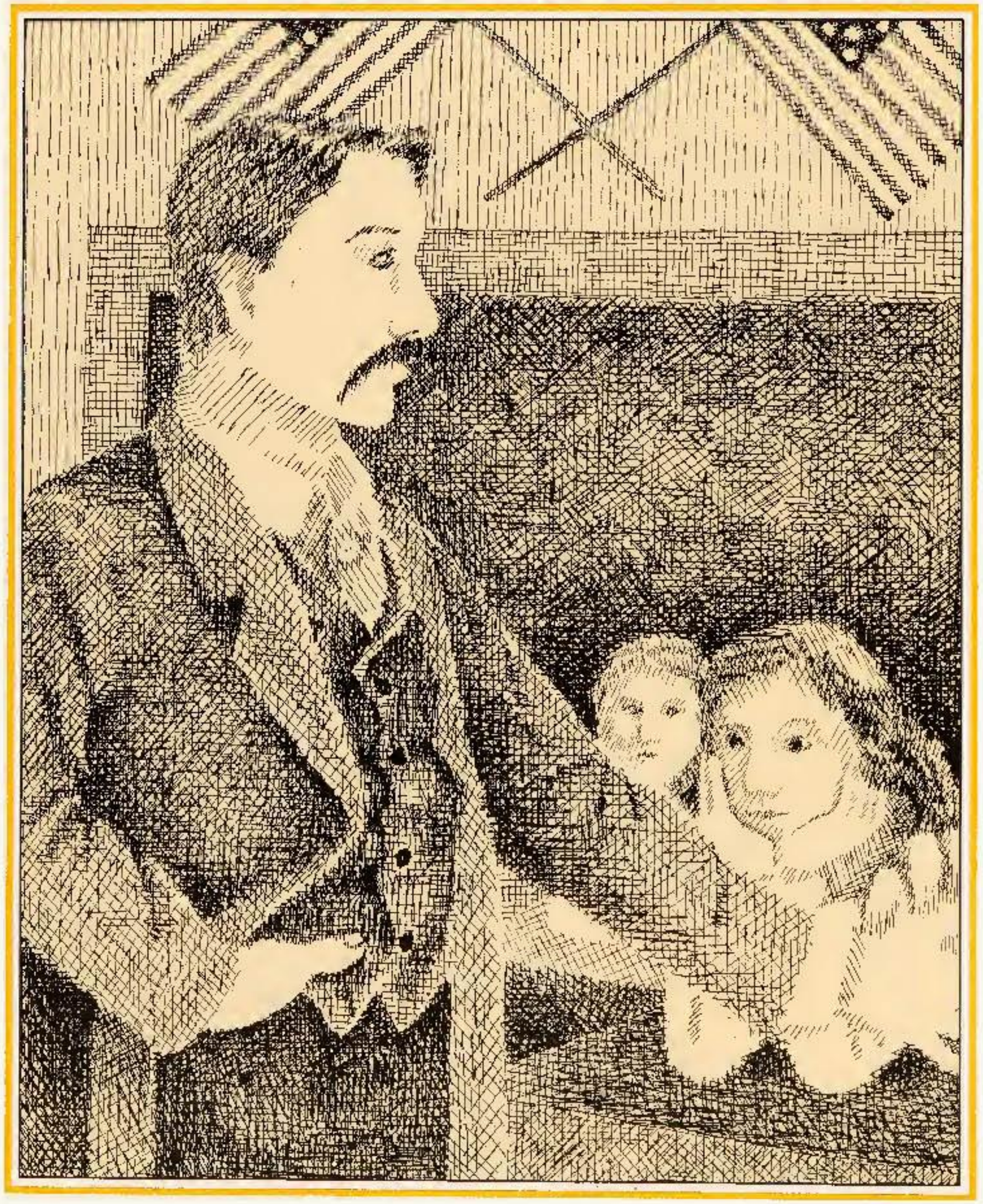
तब पूरी कक्षा ने मिल कर
गणतंत्र का युद्ध गीत गाया।

तक हाईरम मीकर ने
विक्सबर्ग में युलिसिस ग्रांट
की विजय पर एक रिपोर्ट पढ़ी।



इसके बाद जॉन कॉटनवुड ने

सभी छात्राओं-छात्रों को संबोधित किया।



वे गृह युद्ध के वैटरन थे।

कॉटनवुड ने गैटिसबर्ग की लड़ाई में

लड़ने का अपना अनुभव सुनाया।

''बन्दूकों की गोलियाँ मेरे कान के पास से उड़ीं,

लगता था मानों वे सनसनाती निकल रही हों।

मैं बेहद डरा हुआ था,'' उन्होंने कहा।

मिस्टर कॉटनवुड का कहना था कि सबको

मृत सैनिकों को याद करना चाहिए।

''संयुक्त राज्य को जोड़े रखने के लिए

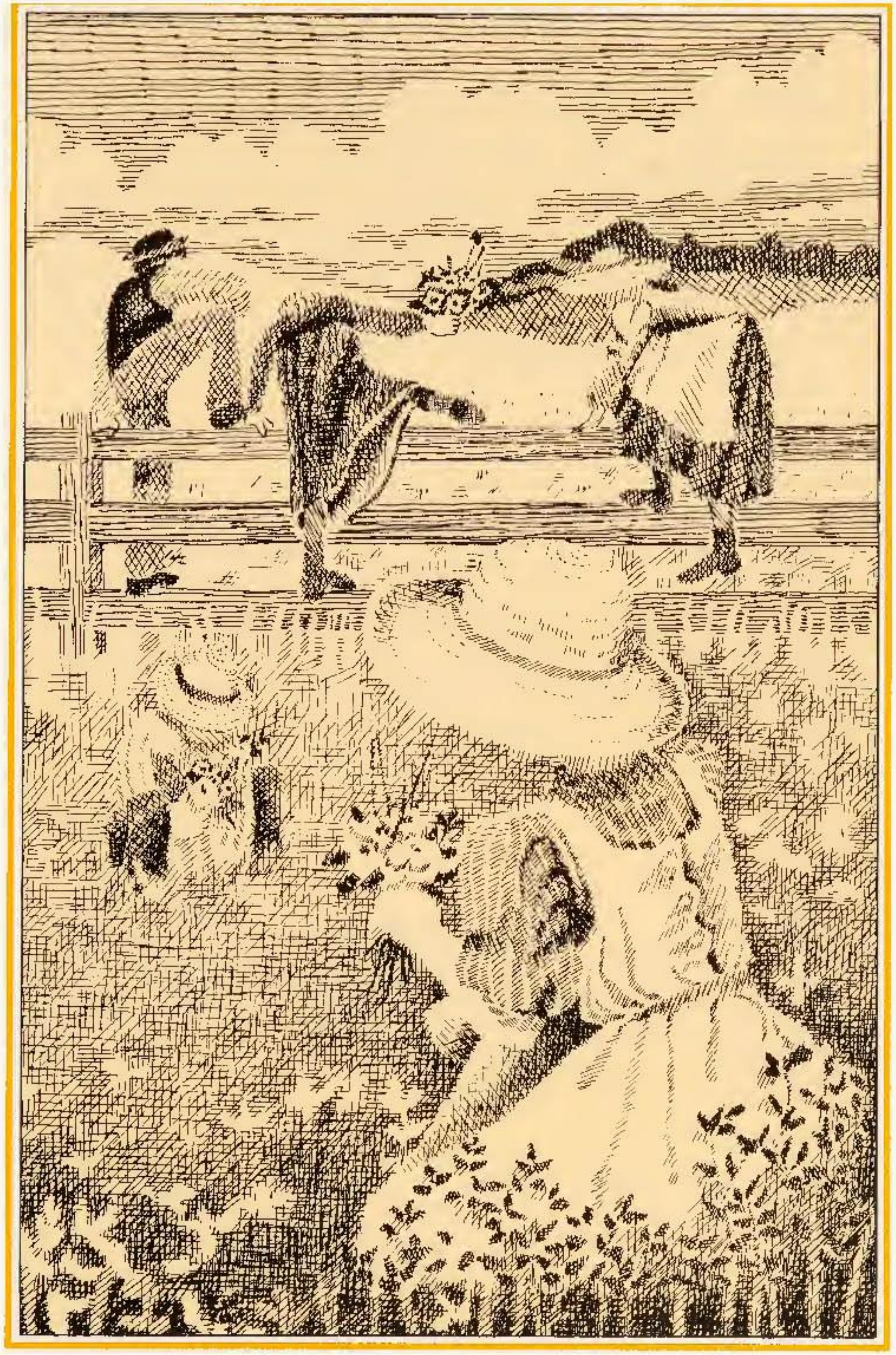
उन्होंने अपनी जानें जो निछावर की थीं।''

उनके भाषण के बाद छात्रों ने

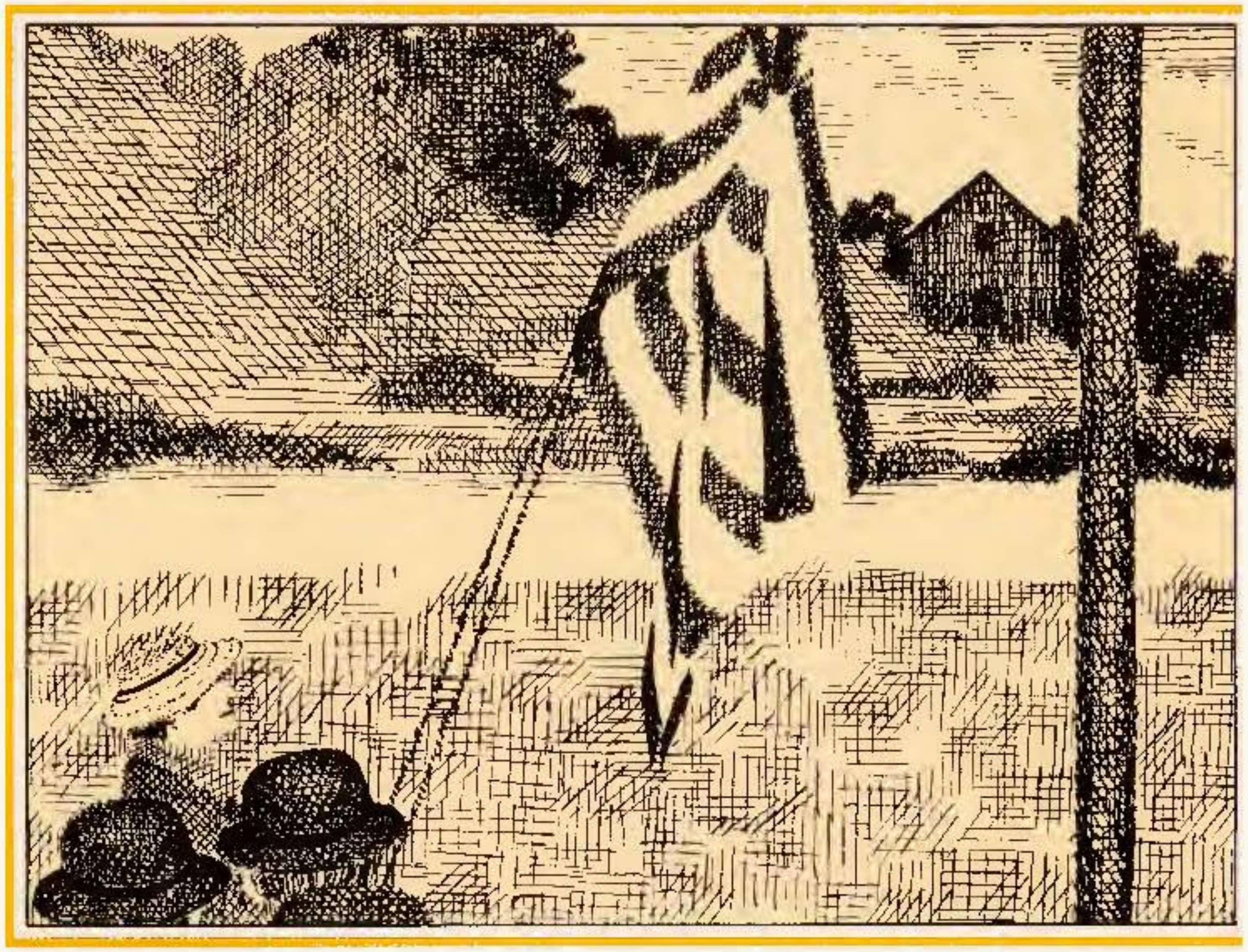
''द स्टार स्पैंगल्ड बैनर'' (अमरीका का राष्ट्रगीत) गाया।

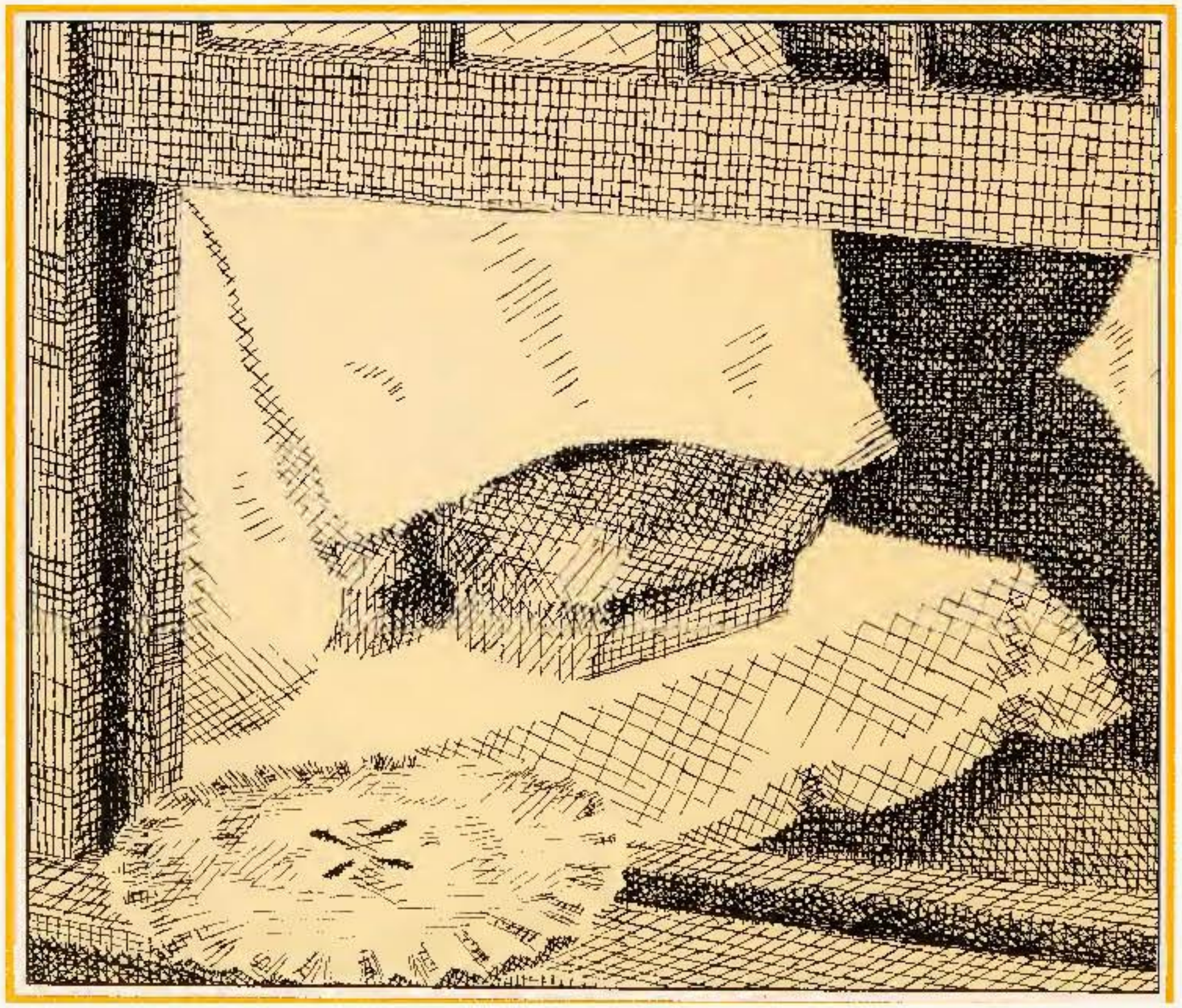
कर्यक्रम के बाद स्कूल की छुट्टी हो गई।

उस शाम कस्बे के सभी परिवार
स्थानीय जी. ए. आर. भवन में गए।
जहाँ उन्होंने अगले दिन की तैयारियाँ कीं।
बच्चे आस-पास के खेतों से
जंगली फूल चुन कर लाए थे।
कुछ लोग अपने
बगीचों से फूल लाए।
जी. ए. आर. सदस्यों की पत्नियों ने
उनसे गलदस्ते बनाए।
इन गुलदस्तों को
लकड़ी के बड़े तसलों में रखा गया,
जो पानी से भरे थे,
ताकि फूल अगले दिन तक
ताज़ा रह सकें।



खाने की खुशबू
दरवाज़ों और खिड़कियों से निकल हवा में महकने लगी।
अन्दर हैम (सूअर की रान) और टर्की पक रही थी,
बड़े भगोनों में फलियाँ भी।
यह सब पकवान
डेकोरेशन डे के भोज के लिए थे।





सूर्योदय के तुरंत बाद ही
डेकोरेशन डे कार्यक्रम शुरु हो गया।
जी. ए. आर. सदस्यों ने
अमरीकी झंडा फहराया।
मृतकों के सम्मान में उसे
आधा झुका रखा गया।



सभी वैटरनों की झंडे के पास

तस्वीरें खींची गईं।

डॉ. रेनविल और विलियम स्कॉट ने

सेना की वर्दी की नीली टोपियाँ पहन रखी थीं।

स्टर्न भाइयों ने अपनी काली फैल्ट टोपियों

पर जी. ए. आर. का प्रतीक लगाया हुआ था।

लैंडस्फोर्ड फिलमोर ने अपने पदक लगाए थे,

जो उन्होंने

फोर्ट डोनलसन की लड़ाई में जीते थे।

अब वैटरनों द्वारा जुलूस का नेतृत्व

करने की बारी आई।

एक बाँसुरी, एक ढ़ोल और

एक छोटा वाद्यवृन्द

वैटरनों के पीछे चला।

उनके भी पीछे थे कस्बे के बाशिन्दे।

सब कब्रिस्तान पहुँचे।

सबके हाथों में छोटे गुलदस्ते

और छोटे अमरीकी झंडे थे।

जुलूस शान्त था और लोग सोचते हुए चल रहे थे।

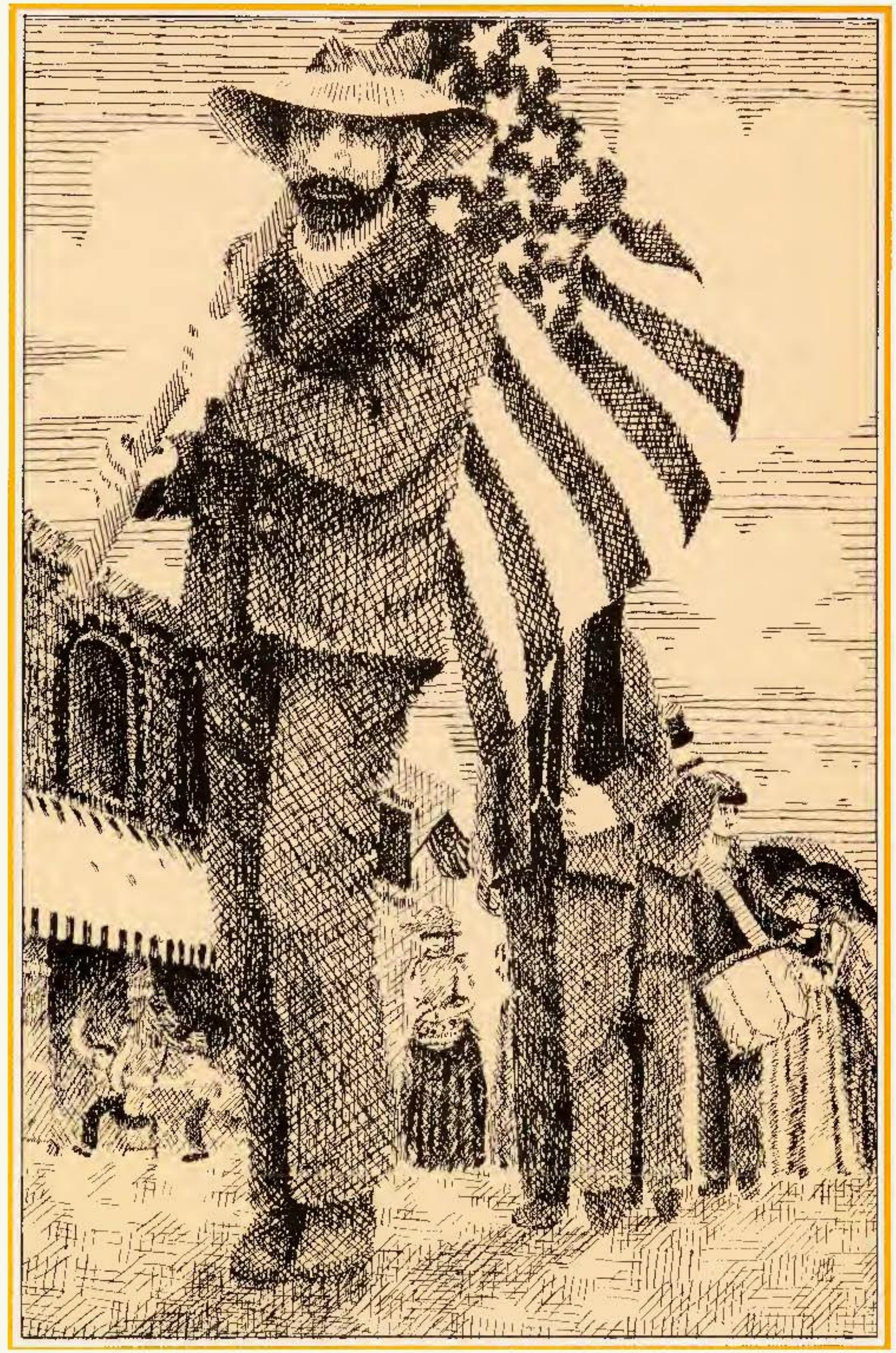
वे मृत सैनिकों के बारे में सोच रहे थे।

वे वैटरनों के बारे में सोच रहे थे,

जो जंग में घायल हुए थे,

जैसे लैन्सफोर्ड फिलमोर

जिसने अपनी एक टाँग खो दी थी।



कब्रिस्तान में महिलाओं और बच्चों ने

कब्रों को सजाया।

उन्होंने हरेक कब्र पर

झंडा लगाया, फूल रखे।

उन्होंने कब्रों पर लगे लोहे से बने जी. ए. आर.
प्रतीकों को साफ़ और सीधा किया।

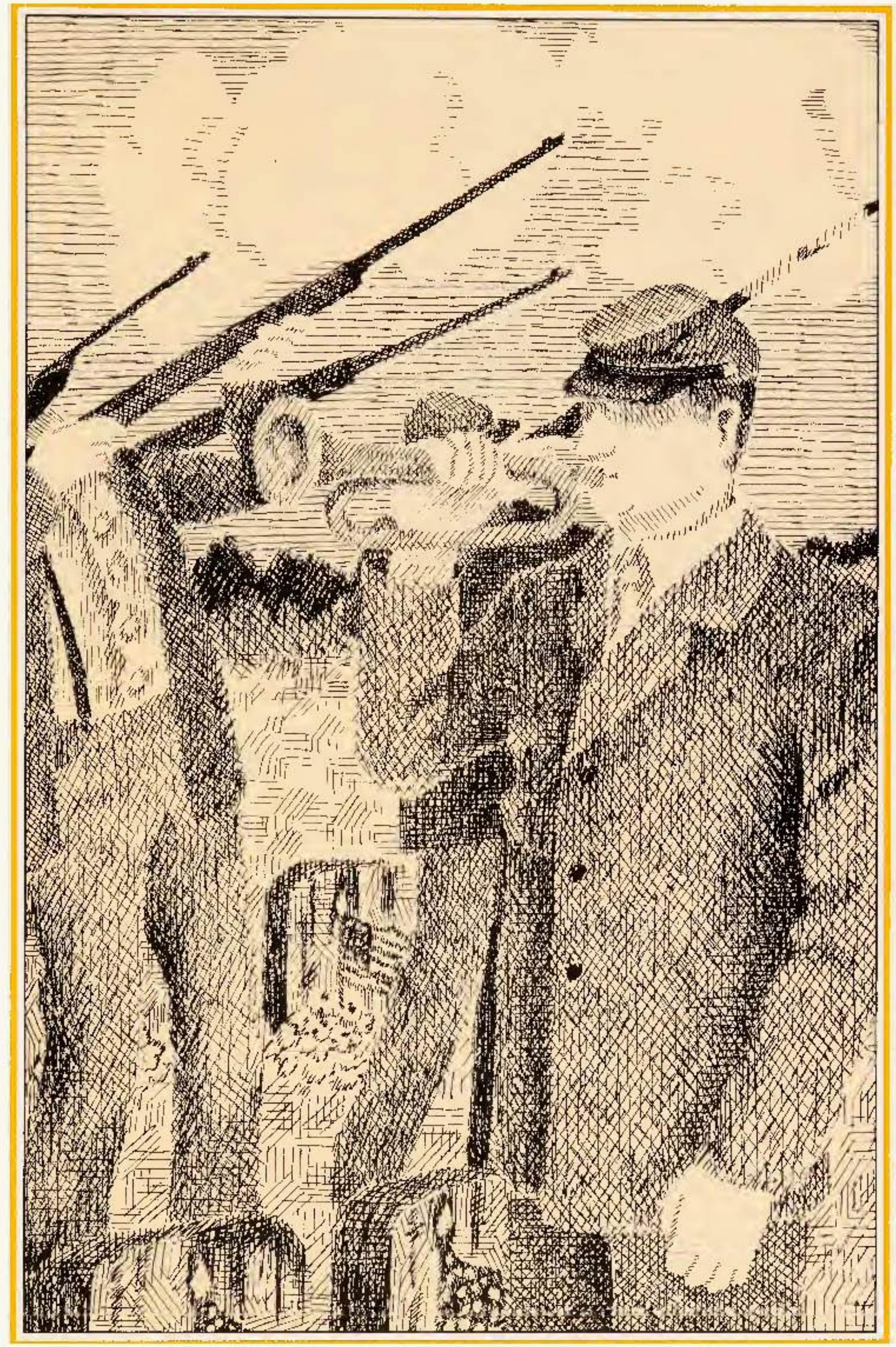
तब पास्टर (पादरी) ने प्रार्थना बोली।

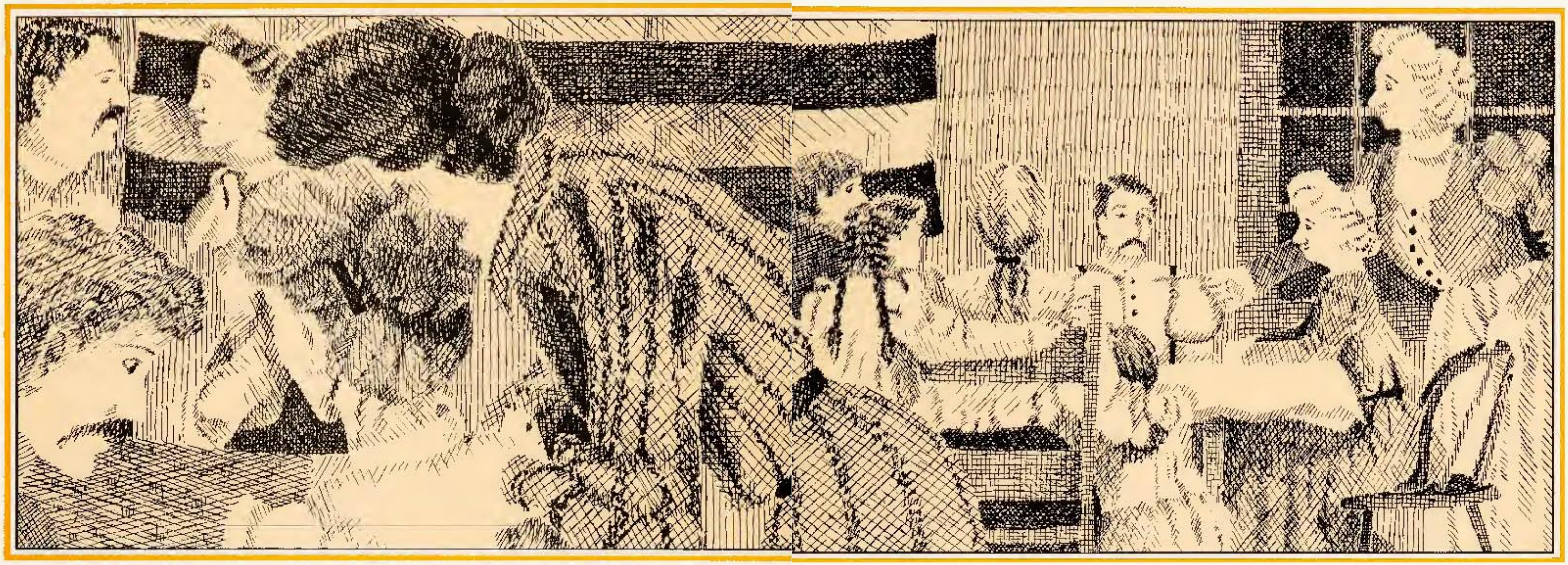
जी. ए. आर. के छह सदस्यों ने

मृत सैनिको को सलाम करने

हवा में अपनी बन्दूकें तीन बार दागीं।

अंत में बिगुल पर "टैप्स" बजाया गया।





तब सब जी. ए. आर. भवन में लौट आए।

जल्द ही भोज परोस दिया गया।

लोग खाने और बातचीत करने लगे।

राइट बहनों ने अपने भाई और पिता

के बारे में बताया।

''पिता की मौत फ्रैड्रिक्सबर्ग में हुई।

वे दक्षिण के लिए लड़ रहे थे,'' एमा ने बताया।

''और बैंजमिन रिचमंड के बाहर हताहत हुआ,

वह उत्तर के लिए लड़ रहा था,'' एडिथ ने बताया।

दोनों बहनों को इसका बहुत दुख था।

पर वे शान्ति के लिए शुक्रगुज़ार भी थीं।

दिन उदासी और खुशी दोनों से भरा था।

यह 1878 को डेकोरेशन डे था।

इसके कुछ ही समय बाद 1882 में

जी. ए. आर. ने 'डेकोरेशन डे' का नाम बदल दिया

और उसे 'मेमोरियल डे' (स्मृति दिवस) कर दिया।

जी. ए. आर. को लगा कि सिर्फ गृह युद्ध में मृत सैनिकों के बदले

सभी युद्धों में जान निछावर करने वालों को याद करना बेहतर होगा।

वे चाहते थे कि उन सबको याद करना उतना ही महत्वपूर्ण हो, जितना उनकी कब्रों को सजाना।

इस समय तक कई उत्तरी राज्यों में

डेकोरेशन डे एक राजकीय अवकाश बन चुका था।

पर दक्षिणी राज्य

डेकोरेशन डे नहीं मनाते थे।

दक्षिणी राज्यों में इस तरह का

एक अवकाश ज़रूर था

पर उनकी तारीखें

हरेक दक्षिणी राज्य में अलग-अलग थी।

1971 में राष्ट्रपति निक्सन ने

मेमोरियल डे को राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया।

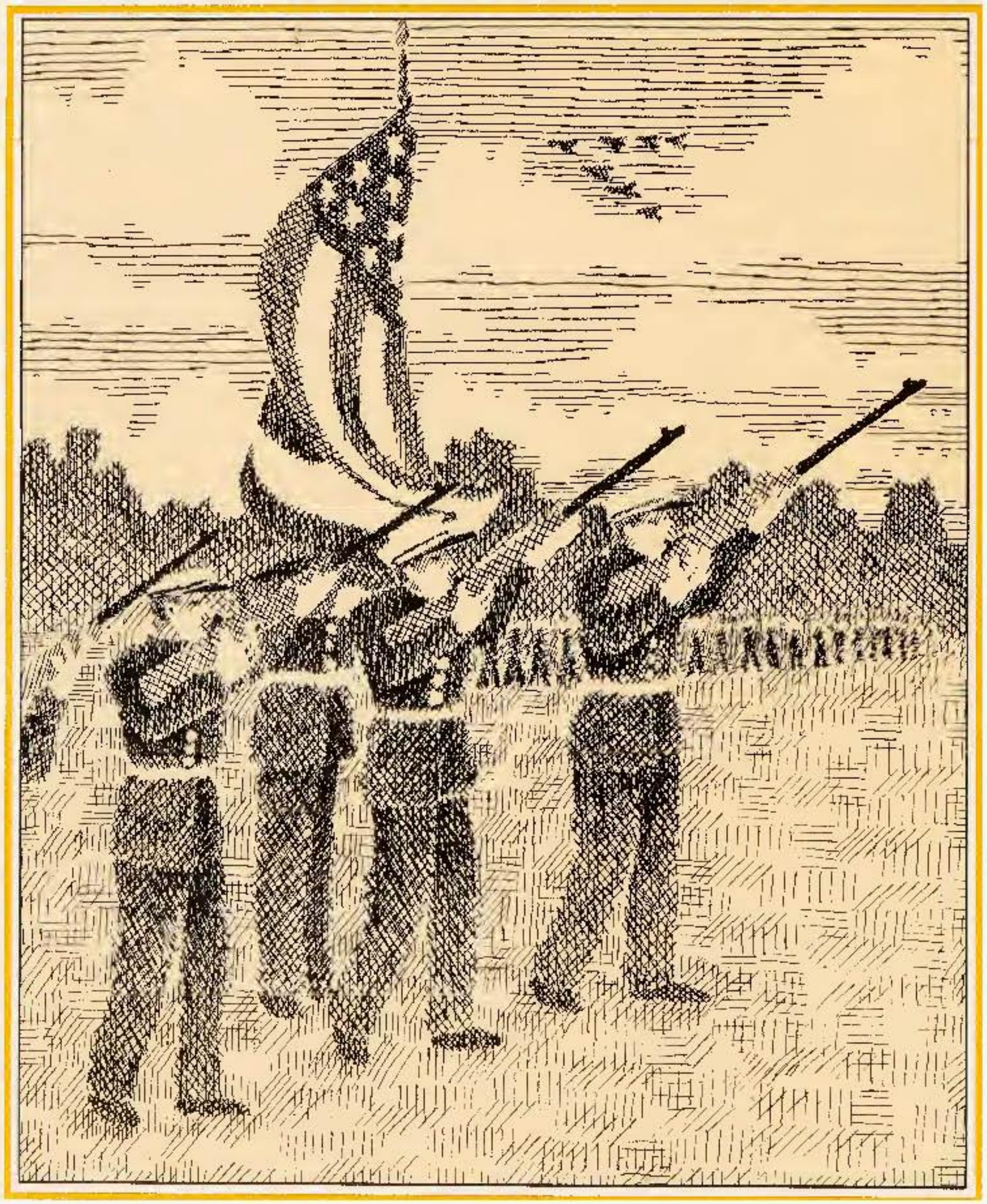


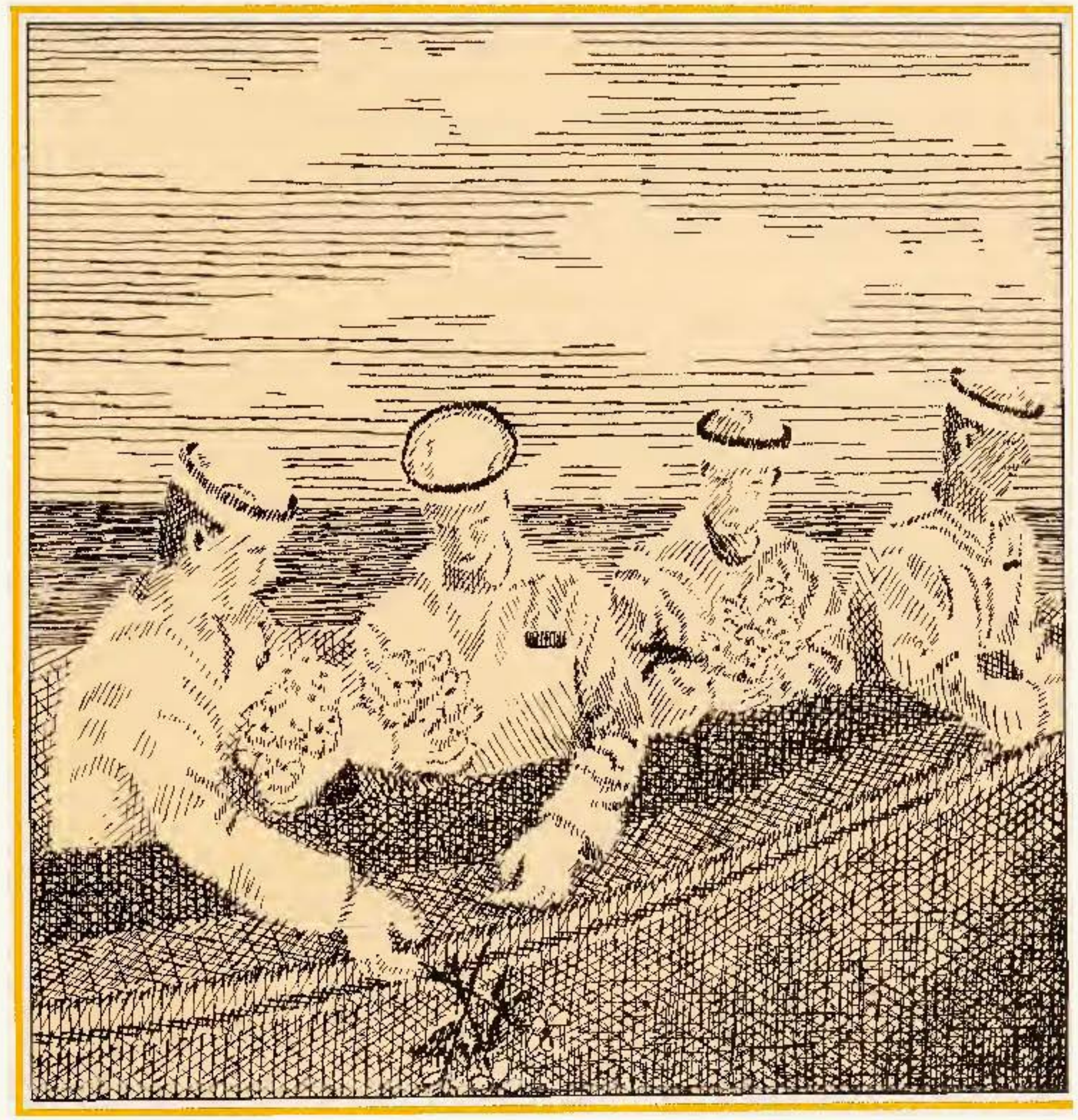
अमरीका ने गृह युद्ध के बाद
कई युद्ध लड़े हैं।
मेमोरियल डे के दिन
याद करने को और भी तमाम
मृत सैनिक हैं।
पर आज हम इस दिन को जिस तरह मनाते हैं उसमें
और 1800 के दशकों के जश्नों में बहुत फर्क नहीं है।
कई कस्बों-शहरों में अब भी जुलूस निकलते हैं।
उनमें वैटरन कूच करते हैं
और सेना के वाद्यवृन्द संगीत बजाते हैं।
बच्चे,
खासतौर से बॉय स्काउट और गर्ल स्काउट
सैनिकों की कब्रों को सजाते हैं।



थल सेना के अड्डों में सैनिक

हवा में बन्दूकें दागते हैं।





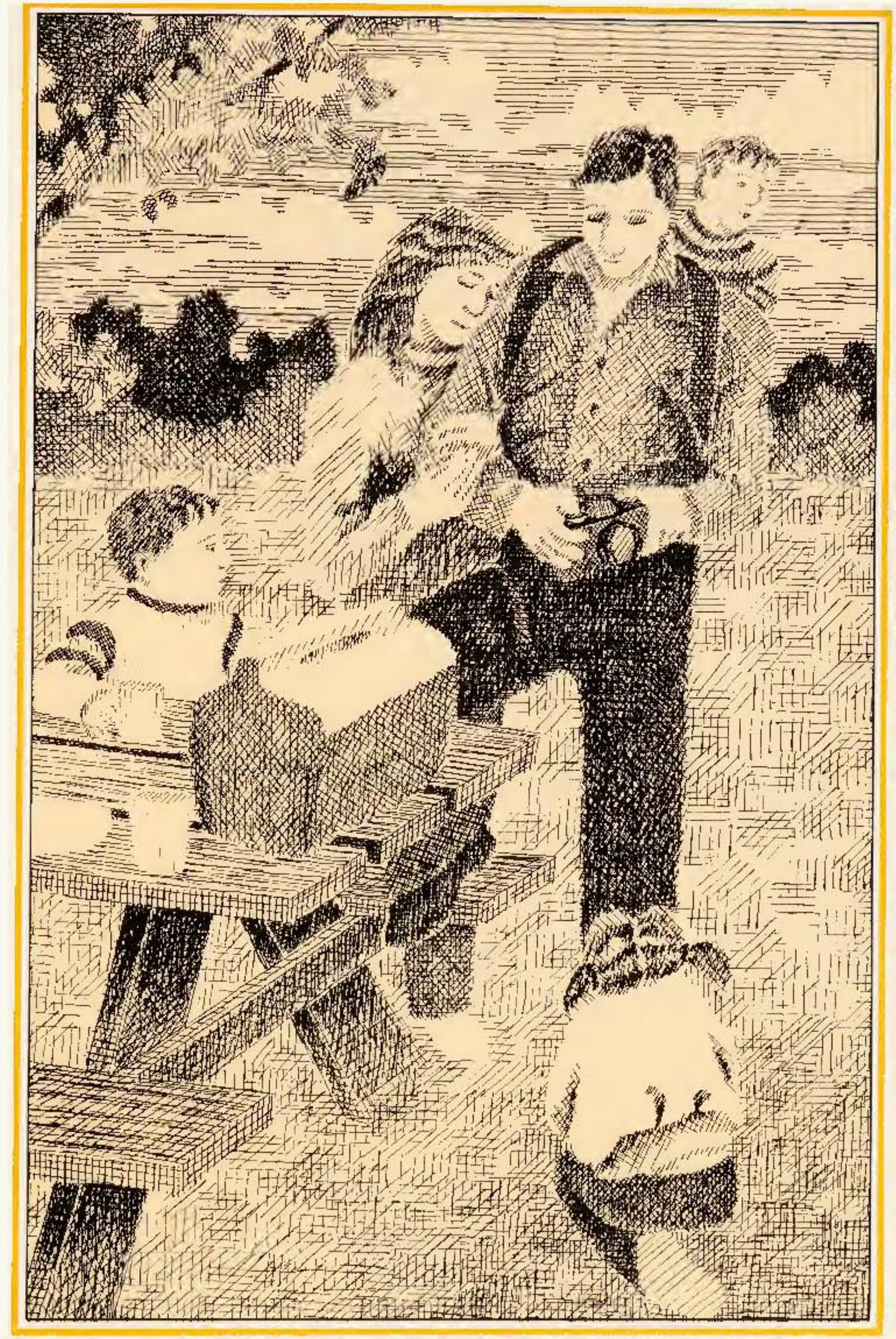
नौ-सेना के सैनिक

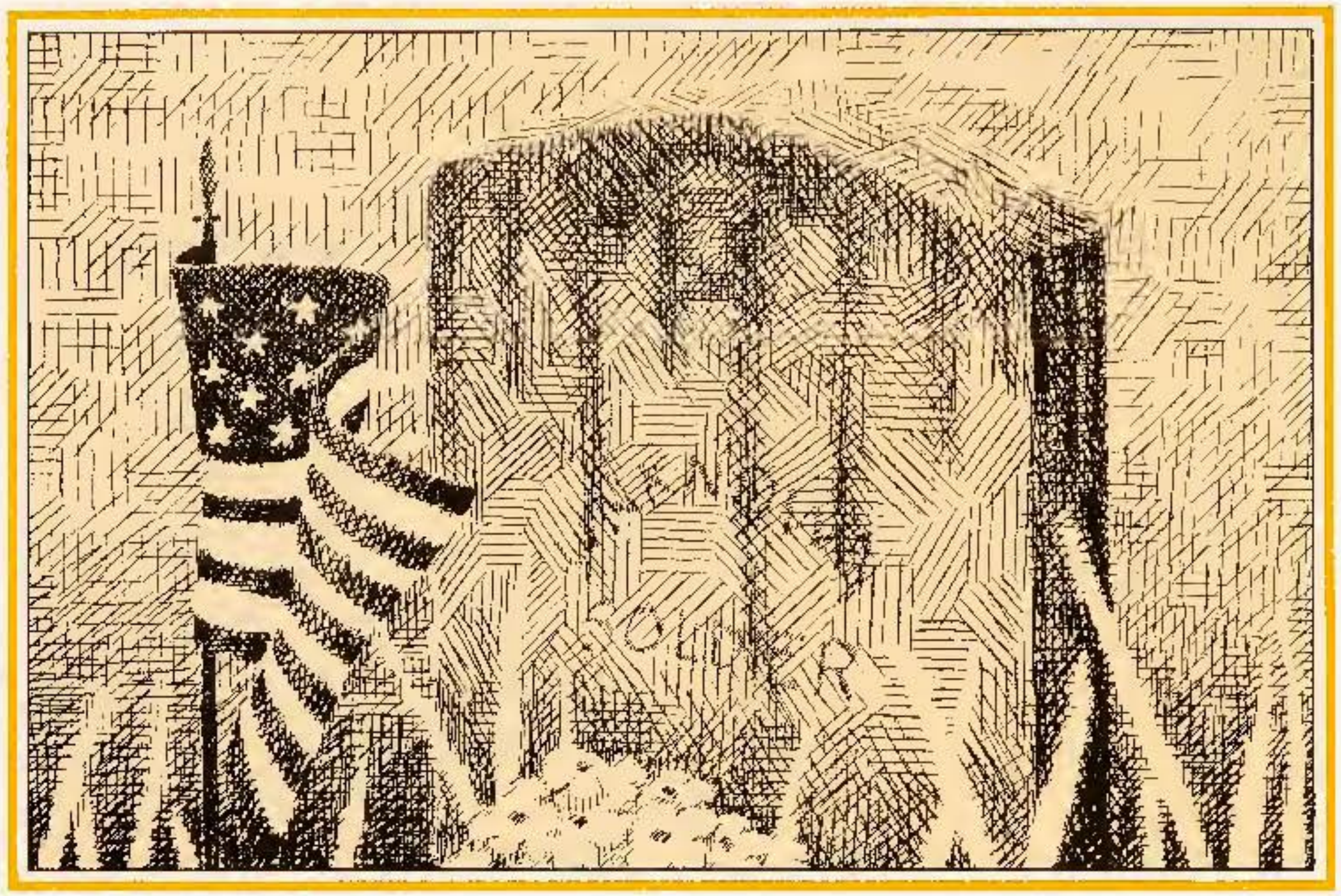
समुद्र में फूल फेंकते हैं।

मृत सैनिकों का सम्मान करने का

यह उनका तरीका है।

आज भी कई लोग पिकनिक
और पारिवारिक भोज आयोजित करते हैं।
फिर भी जश्न मनाने के हमारे कुछ तरीके बदले भी हैं।
आज हम मेमोरियल डे पर
अपने मृत रिश्तेदारों को भी याद करते हैं,
फिर चाहे वे सैनिक न भी रहे हों।
अब मेमोरियल डे हमेशा 30 मई को नहीं मनाया जाता।
1971 में इसका दिन बदल कर
मई महीने का अंतिम सोमवार कर दिया गया था।
अब अधिकांश राज्य इसी दिन मेमोरियल डे मनाते हैं।





हालांकि इस अवकाश का नाम
और इसकी तारीख बदल गई है,
इसे मनाने के हमारे कारण वही हैं।
मेमोरियल अब भी वह दिन है
जब हम शान्ति का जश्न मनाते हैं,
और उन सबको याद करते हैं
जिनकी युद्ध में मौत हुई।